भोगके वास्ते कई गाँव जागीर के बन्धान करदिये कि अबतक माफ हैं।

अठारहवीं निष्ठा।

जिसमें दास्यनिष्ठा की महिमा और वर्णन सोरह भक्तों की कथा का है।

श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमलों की पूर्णचन्द्ररेखा को प्रणाम करके ऋषभदेव अवतार को दण्डवत् करता हूँ कि अयोध्यापुरी में वह अवतार धारण करके ज्ञान और वैराग्य की अन्तिमदशा को संसार में प्रकट किया। महिमा दास्यनिष्ठा की कौन वर्णन करसक्ता है इसमें कुछ संदेह नहीं कि इस संसार से उद्धारके हेतु दास्यनिष्ठा से अधिक और कोई अवलम्ब नहीं यद्यपि भगवत्प्राप्ति के हेतु दूसरी निष्ठा भी बहुत हैं परन्तु परिणाम सब निष्ठाओं का इसी निष्ठा में पहुँच जाता है जैसे सखा व वात्सल्य है और उसमें दास्यभाव प्रकट मुख्य नहीं परन्तु जो मूल अभिप्राय पर दृष्टि जाती है तो वास्तव में जड़ उनके निष्ठा की दास्यभाव से सम्बन्ध रखती है और सखा व वात्सल्यभाव केवल मनकी रुचि से चित्त के लगने वास्ते हैं उनके मन्त्रों से साक्षात् अर्थ शरण होने और दास्यभाव के निकलते हैं तो जब कि उन दोनों निष्ठावालों का यह वृत्तान्त हो तो और निष्ठा एक अङ्ग व मिश्रित दास्यनिष्ठा की आपही होगई और हैं ब्रह्मस्तुति में भागवत में लिखा है कि तबहीं तक द्वैत व सुख दुःख इस मनुष्य की बुद्धि को चुरानेवाले हैं और तबहीं तक गृह कारागार है और तबहींतक मोह जो अज्ञान सो पांव की बेड़ी है कि जबतक भगवत् का दास नहीं होता दूसरा वचन भागवत का है कि जिस भगवत् के केवल नाम लेने और सुनने से निर्मल होजाते हैं उसके दास होनेसे कौन पदवी उत्तम नहीं मिलसक्ती है इस प्रकार के हजारों वचन सब पुराण इत्यादिकों में विख्यात व प्रसिद्ध हैं और यह निष्ठा ऐसी सहज समवायी को अङ्गीकार व प्राप्त है कि जिस किसी से पूछा जाता है तो अपने आपको ईश्वरदास और ईश्वर को स्वामी और मालिक अपना वर्णन करदेता है और यह बोलना कहना सब छोटे बड़ों के मुख से स्वाभाविक है कोई कोई उपासकों ने जो शरणागती को दास्यनिष्ठा से अलग वर्णन किया तो कारण यह है कि दास तो दास्यता व सेवा टहल के करने में विवश व पराधीन है कि सर्वावस्था व सब दशा में उसको अपने स्वामी की सेवा करना उचित व मुख्यतर है व शरणागत अर्थात् शरण में आया हुआ यद्यपि दास से भी अधिक सेवा टहल करता है परन्तु दास के सदृश उस

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/nabhadasa1900/0283
© Universitätsbibliothek Heidelberg
gefördert durch die DFG